एम० ए० (हिन्दी)
I सेमेस्टर (प्रथम पत्र)

M: 9204396227
डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रश्न : देवनागरी लिपि पूर्ण वैज्ञानिक है। यह कथन कहाँ तक ठीक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

किसी भी लिपि का वैज्ञानिक होना इस बात पर निर्भर करता है कि उसमें जो लिखा जाए वैसा ही पढ़ा जा सके। जहाँ तक स्वरों एवं व्यंजनों का क्रम है, उसका उच्चारण इस दृष्टि से हो कि पढ़ने में कहीं असुविधा न हो। लिपि का उद्देश्य तो ध्वनियों को चिह्न देना है जिनकी सहायता से हम भाषा का ठीक बोला जाना वाला रूप जान सकें। देवनागरी लिपि की प्राचीनता के संबंध में हमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। अब रही बात उसके उत्कृष्ट होने की, तो निःसंदेह जो लिपि जितनी वैज्ञानिक होगी वह उतनी ही उत्कृष्ट होगी।

भारत में प्रचलित रोमन (अंग्रेजी) अरबिक (उर्दू) आदि लिपियों के साथ जब हम देवनागरी की तुलना करें तो यह स्पष्ट हो जाता कि इन लिपियों में एक सामान्य नियम नहीं है। अंग्रेजी में 'सी' की ध्वनि कहीं 'स' कहीं 'क' और 'एच' के साथ होने पर 'च' हो जाती है। 'u' को 'अ' और 'उ' दोनों स्वरों के स्थान पर प्रयुक्त किया जाता है। इन त्रुटियों का अहसास तो इन भाषाओं के प्रयोग करने वाले लोगों को भी होता होगा। अतः अब कई अमेरिकन पुस्तकों में अब इस प्रकार सुधरे रूप मिलते हैं। यही कठिनाई उर्दू के साथ भी है। उसमें स्वर और व्यंजन के क्रम के उच्चारण के क्रम ठीक नहीं हैं। एक ध्वनि के लिए कहीं-कहीं एक से अधिक चिह्न हैं। इन साधारण बातों को ध्यान में रखते हुए जब हम देवनागरी लिपि की परख करते हैं तब इसमें वर्णों का क्रम बड़ा

Scanned with CamScanner

वैज्ञानिक प्रतीत होता है। यहाँ 'अ' के 'ब' 'च' या 'स' नहीं होता। यहाँ स्वरों में स्वर का क्रम है और व्यंजनों में व्यंजन का क्रम है। यह एक वैज्ञानिक पद्धति है। एक ही स्थान से बोले जाने व्यंजन एक ही स्थान में हैं जैसे होठों को मिलकर बोले जाने ~~वर्णों~~ वर्णों में से – 'प', 'फ', 'ब', 'भ', 'म' यही सब एक साथ हैं। इसके महत्व का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अब यहाँ अंग्रेजी स्कूलों में भी अंग्रेजी को हिन्दी ध्वनियों में पढ़ाया जाता है। A, B, C, की जगह अब 'अ', ब, स आदि की ध्वनियाँ सिखायी जा रही है।

इतना सबकुछ होने के बाद भी हमें यह मानने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि मनुष्य लिपि के लिए नहीं, लिपि मनुष्य के लिए होता है। जब लिपि आवश्यकता और सुविधा के लिए बदलती आयी है तो हमें उसके परिवर्तन में संकोच नहीं करना चाहिए। मुद्रण एवं टाइप के लिए उनमें थोड़ा परिवर्तन हो सकता है, इसलिए हमें रूढ़िवादी नहीं होना चाहिए। परिवर्तन सदा विकास का द्योतक होता है। कपड़ों पर छपाई के लिए, पत्थरों पर खुदाई के लिए एवं चमड़े पर लिखने के लिए इसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन हो सकता है। लेकिन इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि इसमें कहीं अर्थ का अनर्थ ना हो जाए। क्योंकि युगों से संचित हमारे ज्ञान की पूँजी जो अब मुद्रित हो चुकी है, वह हमारी ही संतान है। उस संतान की रक्षा करना हमारा ही दायित्व है। ऐसा न हो कि इस परिवर्तन के चक्कर में हानि हो जाए। हमारी देवनागरी लिपि में 'श', 'ष' के विवाद मिटाने के लिए 'र', 'व' और 'ख' का भेद बताने के लिए तो कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। राष्ट्र भाषा की लिपि को एक पूर्ण स्वरूप देना भी तो हमारा ही दायित्व है।

सन् 1953 में देवनागरी लिपि में ~~कुछ~~

P.T.O-

Scanned with CamScanner

कुछ सुधार हुए थे जिनका सार था कि 'ख', 'छ', 'ध', 'भ' के बदले नई बनावट के अक्षर लिखे जा सकते हैं। 'भ' के बाईं तरफ एक घुंडी थी जिसे अब हटा दिया गया है। 'छ' को ऊपर से बंद कर दिया गया है। छपाई की सुविधा के लिए अब चंद्रबिन्दु की जगह सिर्फ बिन्दु का प्रयोग होने लगा है। ह्रस्व 'इ', 'उ' की मात्रा अब दायीं ओर होनी चाहिए और केवल इतना हो कि इसकी मात्रा आधी हो और दीर्घ 'ई' की मात्रा पूरी हो। संयुक्ताक्षरों को पृथक कर लिखा जाए और उन्हें हलन्त कर दिया जाए, किंतु अब हलन्त का प्रचलन समाप्त हो गया है। यह सब लिखावट की सुविधा एवं वर्णों की छपाई में असुविधा होने के कारण किया गया है। ताकि वर्णों के उच्चारण में कठिनाई न हो। अतः कहा जा सकता है देवनागरी लिपि पूर्ण वैज्ञानिक एवं अन्य लिपियों से श्रेष्ठ लिपि है।

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा.
मो. 9204396227